श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया,सब की आँखों का तारा
मन ही मन क्यों जले राधिका,मोहन तो है सब का प्यारा ॥
वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया...

जमुना तट पर नन्द का लाला,जब जब रास रचाए रे
तन मन डोले कान्हा ऐसी, मुरली मधुर बजाए रे
सुध-बुध भूली खड़ी गोपियाँ, जाने कैसा जादू डारा ॥
वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया...

रंग सलोना ऐसा जैसे, छाई हो घट सावन की
ऐ री मैं तो हुई दीवानी, मनमोहन मन भावन की
तुम्हरे कारण देख सांवरे,छोड़ दिया मैंने जग सारा॥

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया, सब की आँखों का तारा
मन ही मन क्यों जले राधिका,मोहन तो है सब का प्यारा

॥ गीतम् 7॥

(अथ सप्तमप्रबन्धः गुर्जरीरागेण प्रतिमण्ठ्ताले गीयते)

मामियं(ञ्) चलिता विलोक्य वृतं(वँ) वधूनिचयेन ।
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ।
हरिहरि हतादरतया सा गता कुपितेव ॥ 1॥

किं(ङ्) करिष्यति किं(वँ) वदिष्यति सा चिरं(वँ) विरहेण ।
किं(न्) धनेन जनेन किं(म्) मम जीवनेन गृहेण ॥ 2॥ हरिहरि

चिन्तयामि तदाननं(ङ्) कुटिलभ्रु कोपभरेण ।
शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं(म्) भ्रमरेण ॥ 3॥ हरिहरि

तामहं(म्) हृदि सं(ङ्)गतामनिशं(म्) भृशं(म्) रमयामि ।
किं(वँ) वनेऽनुसरामि तामिह किं(वँ) वृथा विलपामि ॥ 4॥ हरिहरि

तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं(न्) तवाकलयामि ।
तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेऽनुनयामि ॥ 5॥ हरिहरि

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ।
किं(म्) पुरेव ससम्भ्रमं(म्) परिरम्भणं(न्) न ददासि ॥ 6॥ हरिहरि

क्षम्यतामपरं(ङ्) कदापि तवेदृशं(न्) न करोमि ।
देहि सुन्दरि दर्शनं(म्) मम मन्मथेन दुनोमि ॥ 7॥ हरिहरि

वर्णितं(ञ्) जयदेवकेन हरेरिदं(म्) प्रवणेन ।
किन्दुबिल्वसमुद्रसम्भवरोहिणीरमणेन ॥ 8॥ हरिहरि